D. El. Ed. 2nd sem

29 May 2020
Friday

पाश्चात्य विचारकों का शिक्षा में योगदान –

शिक्षाशास्त्री चाहे वह पाश्चात्य देशों में जन्मे हो या भारतीय परिवेश में, सभी का उद्देश्य शिक्षा को व्यापक तथा सर्वहित के योग्य बनाना रहा है। सभी शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा को सभी के लिए उपयोगी बनाने के प्रयास को उचित ठहराया है। रूसो, फ्रॉबेल, मॉण्टेसरी, पेस्टालाजी, डीवी तथा रसेल आदि पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर नये आयाम प्रस्तुत किये हैं।

प्रमुख शिक्षा विचारक हैं — प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी, फ्रॉबेल, मारिया मॉण्टेसरी।

प्लेटो (427-347 B.C.)

सुकरात का शिष्य → प्लेटो
प्लेटो की माँ → सोलन वंश
पिता → अरिस्टन
विश्व भ्रमण → मेगारा, मिस्र, इटली, भारत आदि की यात्रा की।
रचनाएँ → अपोलॉजी, क्रीटो, फीडो, सिम्पोजियम, रिपब्लिक, दी लॉज।

प्लेटो के अनुसार शिक्षा का अर्थ →

"मैं युवकों एवं उनसे अधिक उम्र वालों को सद्गुणों की उत्पादक उस शिक्षा के बारे में कह रहा हूँ, जो उन्हें उत्साहपूर्वक नागरिकता के पूर्ण आदर्श की प्राप्ति में लगाती है।

प्लेटो ने आदर्श राज्य के न्याय को एक सद्गुण बताया। यह आदर्श न्याय निम्नलिखित बातों से कार्यान्वित है —

① बुद्धिमता।
② साहस।
③ संयम।

इसी को आधार मानकर प्लेटो ने उक्त तीन वर्गों की शिक्षा पर विशेष बल दिया।

① संरक्षक या न्यायधीश।
② सैनिक।
③ व्यावसायिक।

प्लेटो के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

① वैयक्तिक उद्देश्य ② सामाजिक उद्देश्य।

प्लेटो के अनुसार पाठ्यक्रम

1 => प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए उसने शारीरिक प्रशिक्षण तथा संगीत को स्थान दिया।

② => प्लेटो ने व्यक्ति को मन से शारीरिक प्राणी माना है।

3 => माध्यमिक कक्षाओं के लिए उसने दर्शन, ज्योतिष, गणित को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया। संगीत। शारीरिक प्रशिक्षण पर बल।

4 => खेल व्यायाम और घुड़ सवारी पर बल।

प्लेटो के अनुसार शिक्षण की विधियाँ ↓

1 => प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग।

2 => व्याख्यान विधि और प्रयोगात्मक विधि का प्रचलन।

3 => दर्शनशास्त्र तथा तर्कशास्त्र विधि को अपनाने की सिफारिश।

4 => खेल के माध्यम से ही छात्र का स्वरूप बनता है।

5 => खेलों का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

प्लेटो के अनुसार शिक्षक तथा विद्यालय ↓

प्लेटो अकादमी जैसी संस्था की स्थापना।

आत्मा के विकास के लिए आवश्यक।

आदर्शवाद को स्थापित करना शिक्षक का कार्य।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान ↓

① शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना।

② छात्र के व्यक्तित्व का विकास।

③ नैतिक गुणों का विकास आवश्यक।

④ आयु तथा स्तर के अनुरूप पाठ्यक्रम।

End

Scanned with CamScanner